बहनों का ब्रह्म विद्या मंदिर

कमला भसीन

अभी कुछ दिन पहले महाराष्ट्र में पवनार जाने का मौका मिला। वहां पर श्री विनोबा भावे का बनाया एक आश्रम है। विनोबा जी हमारे देश के एक बड़े चिंतक, समाज सेवी, गांधी वादी विचारधारा के प्रचारक और विद्वान थे। सब कुछ त्याग कर वे ज्ञान, आत्मज्ञान की खोज में लग गए थे। गांधी जी की तरह ही विनोबा जी ने भी महिलाओं के जागरण के बारे में सोचा, लिखा और काम किया।

पवनार आश्रम में ही ब्रह्म विद्या मंदिर है जो 1959 में शुरू हुआ। विनोबा का सपना था कि एक ऐसा आश्रम हो जहां लोग मिल कर रहें, मिल कर काम करें, मिल कर ज्ञान और विद्या पाएं। यह सपना विनोबा ने महिलाओं को सौंपा। विनोबा कहा करते थे जब तक औरतें ज्ञान नहीं पाएंगी, खुद धार्मिक ग्रन्थ नहीं लिखेंगी, काव्यों की रचना नहीं करेंगी तब तक वे पुरुषों के मोहताज रहेंगी। विनोबा स्त्री-शक्ति में विश्वास रखते थे। वे कहते थे स्त्रियों में जो शक्ति है वह पुरुषों में नहीं है। इस स्त्री-शक्ति को जगाने का विनोबा ने खूब काम किया।

आज इस विद्या मंदिर में तेरह बहनें रहती हैं। अलग-अलग धर्मों और अलग-अलग उम्र की। दो बहनें विदेशी भी हैं जो सालों से यहीं रहती हैं।

विद्या मंदिर की सभी बहनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है। वे आश्रम के सब काम खुद करती हैं। वहां कोई नौकर नहीं है। अपना भोजन खुद पैदा करती हैं—अनाज और धान उगाती हैं, एक गोशाला चलाती हैं। अपना प्रैस (छापाखाना) चलाती हैं। इस प्रैस से और ख़र्चों के लिए कमाई भी हो जाती है।

सभी बहनें मिल कर रसोई का काम करती हैं और शौचालय, स्नानघर की सफाई भी खुद ही करती हैं। यानि वे पूरी तरह से स्वावलंबी हैं, किसी पर मोहताज नहीं हैं।

दिन में 5-6 घंटे शारीरिक काम के साथ-साथ वे पढ़ने लिखने का काम भी करती हैं। यहां से वे एक पत्रिका निकालती हैं 'मैत्री'। मैत्री में स्त्री-जागरण और स्त्री-शक्ति के प्रचार के साथ-साथ सामाजिक प्रश्नों पर भी चर्चा होती है।

इसी विद्या मंदिर से बहनें स्त्री-मुक्ति अभियान चलाती हैं। हर साल एक स्त्री-मुक्ति जलसा होता है जिसमें देश के अलग-अलग हिस्सों से बहने आती हैं।

मैं इन ज्ञानवती, आत्मनिर्भर बहनों को देखकर बहुत ही प्रभावित हुई। मन किया मैं भी कम से कम कुछ महीने ऐसे अच्छे वातावरण में रहूं। घर के पचड़ों से दूर, तू-तू, मैं-मैं से दूर। कुछ पढ़ूं, कुछ सोचूं, कुछ लिखूं और शरीर से मेहनत करूं। औरतों के लिए इस तरह के आश्रमों की बहुत ज़रूरत है जहां वे आम ढर्रे से अलग कुछ कर सकें। इस आश्रम की बहनें मानती हैं कि हर औरत के लिए शादी करना ज़रूरी नहीं है, मां बनना ज़रूरी नहीं है।

एक बात जो मुझे सबसे अच्छी लगी—वह थी कि यहां सब निर्णय मिल कर सर्व-सम्मति से लिए जाते हैं। यानि अगर एक भी बहन किसी निर्णय के ख़िलाफ़ है तो वह निर्णय नहीं लिया

जा सकता। यहां कोई बड़ा नहीं, छोटा नहीं, सब बराबर हैं। हर काम का भी बराबर मूल्य है। सफ़ाई के काम को या खाना पकाने के काम को उतना महत्त्वपूर्ण और कीमती माना जाता है जितना, पढ़ने-लिखने या छपाई के काम को।

इस आश्रम में छपी किताबें पढ़ने लायक हैं। नई सोच, नये विचार। विनोबा जी की एक पुस्तक "स्त्री-शक्ति" मैंने पनवार आश्रम की किताबों की दुकान से ख़रीदी। छोटी सी किताब पर गहरी सोच। यह किताब इस पते से मंगाई जा सकती है।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणासी